Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 10484290

Roll No. 23262000041
Total Mark 73/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A310302T - HISTORY OF TABLA

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	5/5						
1B	5/5						
1C	5/5						
1D	5/5						
1E	5/5						
1F	5/5						
1G	5/5						
1H	5/5						
1I	5/5						
2	14/15						
3	NA/15						
4	NA/15						
5	NA/15						
6	NA/15						
7	NA/15						
8	14/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 13·01/25 Shift IInd Shift Room No.: 28
Paper Code: A310302T Subject: Music (Tabla) Year/Sem: 3rd Sem
Name of Candidate: AKANKSHA SONI
Roll No.: 2326200041

COE Facsimile | Signature of Invigilator | Signature of Candidate

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A310302T
Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course B.A Fine Arts and Performing Art
Session 2024-25 Year/Semester 3rd Sem
Subject Music Tabla

Paper Code: A310302T

Exam Date: 13012025

Name of Candidate: AKANKSHA SONI

Father's Name: LUXMI KANT

महाविद्यालय का कोड
College Code: KN015

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code: KN015

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam

संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex. Student ○
व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

10484290

A310302T
Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या
Enrollment Number: CSJMA23000116349

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2326200041

पेपर कोड Paper Code: A310302T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method	Incorrect method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ⊙

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उ पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्र में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर व निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा क कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Pape Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damag in your answer script, if found than change the answer scri immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g Subject Code. Subject Name and Question of the Questio Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement the exam, so that it can be corrected in TIME. After that n corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over paper should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्दिशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

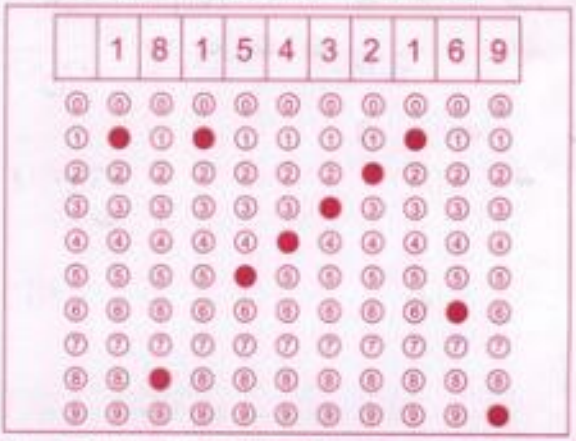

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

Paper Code A 3 1 0 3 0 2 T 01

खण्ड - अ

उत्तर - 1(a)

भारतीय सांगीतिक वाद्य यंत्र - भारतीय संगीत में वाद्य यंत्रो को विभिन्न संगीतकारों द्वारा मुख्यतः चार भागों में विभाजित किया गया है।
भरत मुनि, मतंग मुनि, शारंगदेव जी आदि ने वाद्यों को 4 प्रकार से वर्गीकृत किया है ये प्रकार निम्नलिखित हैं —

1. तत वाद्य
2. सुषिर वाद्य
3. घन वाद्य
4. अवनद्ध वाद्य

तत वाद्य - वे वाद्य जिनका वादन तारों पर आघात द्वारा किया जाता है तत वाद्य कहलाते है ये दो प्रकार में विभाजित किये जाते है
(i) तत ii वितत
उदाहरण - सितार, वीणा, इसराज, वायलिन आदि

सुषिर वाद्य - वे वाद्य जिनका वादन फूंककर, हवा (प्राणवायु) द्वारा किया जाता है वे सुषिर वाद्य कहलाते हैं।

उदाहरण - बांसुरी, हारमोनियम

घन वाद्य - वे वाद्य जो मुख्यतः धातु निर्मित होते है उन्हे आपस मे टकराकर बजाया जाता है वह घन वाद्य कहलाते

Do Not Write anything in this Portion

है।

उदाहरण. मंजीरा, घुंघरु, घण्टा, झुनझुना आदि।

अवनद्ध वाद्य - वे वाद्य जिनका निर्माण खाल द्वारा किया जाता है।
ये वाद्य खोखले लकड़ी के या मिट्टी के बने वाद्यों में खाल को चढ़ाकर बनाये जाते हैं
अतः इन वाद्यों को चरमज वाद्य भी कहा जाता है

उदाहरण - तबला, ढोलक, पखावज, ढोल नक्कारा आदि

अवनद्ध वाद्य को ताल वाद्य भी कहा जाता है।

उत्तर - 1(b)

भारतीय संगीत में तबला की महत्ता -

भारतीय संगीत में तबला विशेष स्थान रखता है। तबला मुख्यतः एक ताल वाद्य है।
जिसका निर्माण चर्म द्वारा किया जाता है अतः इसे चरमज भी कहा जाता है।
कहा जाता है तबले का आविष्कार अमीर खुसरो जी ने किया गया इस बात पर बहुत मतभेद है परन्तु

Paper Code A31030 2T 03

यह जरूर कहा जा सकता है कि नृत्य हो अथवा गायन उनकी संगत करने के लिए एक ऐसे ताल वाद्य की आवश्यकता थी जो विभिन्न तालों में निबद्ध हो तथा जिसकी जोरदार संगति से गायन तथा नृत्य अत्यधिक खिल उठे।
मंदिरों से लेकर साम्राज्य सांगीतिक सभाओं में तबले का प्रयोग तेजी से बढ़ता चला गया।
यह सांगीतिक रचना को और अधिक मनोरम तथा कर्णप्रिय बना देता है।
भगवान के भजनों से लेकर सुगम संगीत के गीतों तक सबमें इसका प्रयोग उल्लेखनीय है।
तबले का एकल वादन मंत्रमुग्ध करने वाला होता है।
तबला वादक जिन्होंने इसे उच्चतम स्थान पर स्थापित किया वे हबीबुद्दीन, पं राम सहाय, कि० कण्ठे महाराज, जाकिर हुसैन इत्यादि हैं।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर - 1(c)

तबले के घराने - घराना का तात्पर्य घरआना लगाया जाता है

घराना परम्परा मुख्यतः मुगल काल से मानी जाती है। वादन शैली के आधार पर घराने निर्मित इसमें गुरु अपने परिवारी जन, रिश्तेदारी तथा तथा वंश को ही गायन वादन अथवा नृत्य सिखाते थे वहीं से घराना प्रथा प्रारम्भ हुई

तबले के मुख्यतः 6 घराने है।

दिल्ली घराना तथा अजराड़ा घराना को पश्चिम बाज कहते है।

लखनऊ घराना, बनारस घराना, फर्रुखाबाद घराना को पूरब बाज कहते है।

पंजाब घराना स्वतन्त्र घराना है इसकी वादन शैली स्वतन्त्र रूप से विकसित हुई है।

Paper Code A 3 1 0 3 0 2 T 05

उत्तर - 1(a)

आड़ाचार ताल - आड़ाचार ताल को आड़ा चौताल भी कहते है।
इस ताल लय डगमगाती हुई चलती है अत: इसका नाम आड़ाचार ताल पड़ा
यह एक समपदीय ताल है जिसका वादन तबले पर प्रमुखता से किया जाता है।
यह एक खुले बोलों की ताल है
यह 14 मात्राओं की ताल होती है

ताल - आड़ाचार ताल
मात्रा - 14
ताली - 4 ताली - 1, 3, 7, 11
खाली 3 खाली - 5, 9, 13
विभाग - 7
छन्द - 2|2|2|2|2|2|2

ठेका

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल	धिं	तिरकिट	धी	ना	तू	ना	क	ता	तिरकिट	धी
चिन्ह	X		2		0		3		0	

मात्रा	11	12	13	14
बोल	ना	धी	धी	ना
चिन्ह	4		0	

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 3 1 0 3 0 2 T

उत्तर - 1(e)

अजराड़ा घराना - अजराड़ा घराने के जनक कल्लू खाँ तथा मीरू खाँ जी थे!

अजराड़ा घराने के शुरुआत उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के अजराड़ा नामक स्थान से हुई।

यह घराना दिल्ली घराने से निकला हुआ घराना है।

इस घराने को पश्चिम बाज भी कहते हैं।

कल्लू खां तथा मीरु खां जी ने दिल्ली घराने के सिताब खाँ से शिक्षा ली इसी कारण अजराड़ा घराना मे दिल्ली घराने की झलक दृष्टिगत होती है

A 3 1 0 3 0 2 1

उत्तर - 1(f)

अवनद्ध वाद्य - वे वाद्य जिनका निर्माण खोखले पात्र में खाल मढ़कर किया जाता है। अवनद्ध वाद्य कहलाते है।

अवनद्ध वाद्यों को ताल वाद्य भी कहा जाता है।

चर्म से बने होने के कारण इन्हें चरमज भी कहा जाता है।

पांच अवनद्ध वाद्य

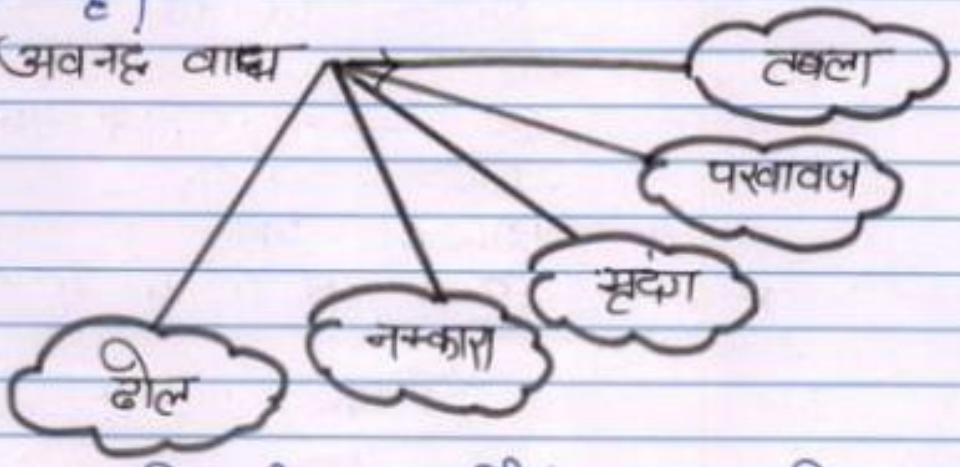

तबला एक दो नगीय वाद्य है इसका प्रयोग उत्तर शास्त्रीय संगीत मे अधिक होता है।

पखावज का प्रयोग कर्नाटक संगीत में किया जाता है खुले बोलों का वादन होता है।

मृदंग से ही पखावज का निर्माण हुआ है। कर्नाटक संगीत मे प्रयोग

नक्कारा दो नगीय वाद्य है लोकगीतो मे प्रयोग होता है।

ढोल एक एकनगीय वाद्य है जिसका प्रयोग पंजाब प्रान्त मे प्रचुरता से होता है।

Paper Code

उत्तर - 1(g)

तिलवाड़ा ताल - तिलवाड़ा ताल 16 मात्रा की एक सम्पदीय ताल है।
तिलवाड़ा ताल का वादन विलम्बित ख्याल आदि मे किया जाता है
यह तबले की खुले बोलों की ताल है!

ताल - तिलवाड़ा
मात्रा - 16
ताली - 1, 5, 13 मात्रा पर
खाली - 9 पर
विभाग - 4
छन्द - 4| 4| 4| 4

ठेका

मात्रा	1	2	3	4	|	5	6	7	8
बोल-	धा	तिरकिट	धिं	धिं	|	धा	धा	तिं	तिं
चिन्ह	X				|	2			
मात्रा	9	10	11	12	|	13	14	15	16
बोल	ता	तिरकिट	धिं	धिं	|	धा	धा	धिं	धिं
चिन्ह	0				|	3			

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर - 1(h)

तीव्रा ताल - तीव्रा ताल एक ऐसी ताल है जिसकी खाली नही होती है
इसका वादन मुख्यतः पखावज पर होता है
यह खुले बोलो की ताल है

ताल - तीव्रा
मात्रा - 7
ताली - 1, 4, 6
खाली - कोई नही
विभाग - 3

ठेका

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7
बोल	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
चिन्ह	X			2		3	

उत्तर - 1(j)

तत वाद्य - वे वाद्य जिसमें वादन (तारों द्वारा) तार पर आघात करके किया जाता है! तत वाद्य कहलाते है
इसके दो प्रकार है (i) तत (ii) वितत

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

खण्ड - ब

उत्तर - 2

तबले का अंग सहित वर्णन- तबला एक वो-नीय वाद्य है।

तबला शब्द की उत्पत्ति 'तब्ल' शब्द से हुआ है जो कि एक फारसी शब्द है।

इसके अविष्कार का श्रेय कुछ विद्वान अमीर खुसरो को देते है परन्तु यह प्रमाणित मत नहीं है

तबले मे दायां को तबला तथा बायां का डग्गा कहते है।

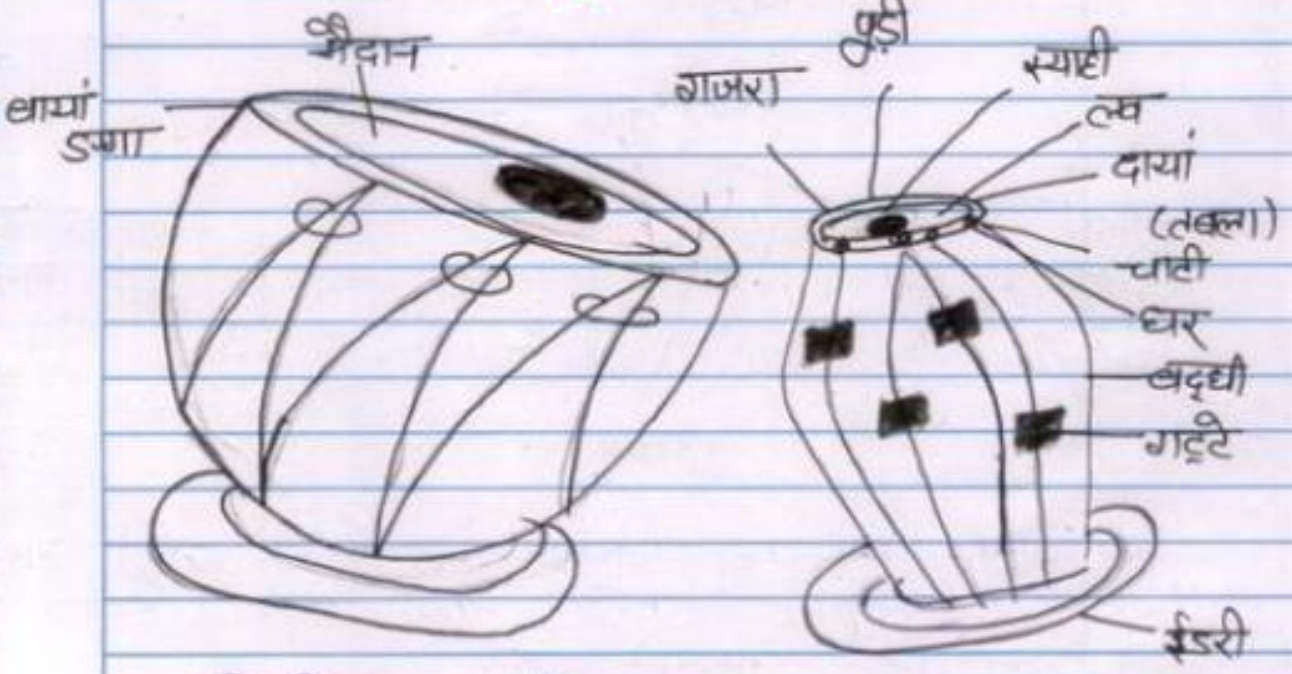

डोरी- तबले मे डोरी या बद्धी रूप होती है जो ऊँट की खाल की होती है

गट्टा- तबले मे 8 गट्टे लगे होते है जिनसे स्वर मिलाया जाता है

घर- गजरे पर, 16 छेद होते है जिन्हे घर कहते है।

पुड़ी - खाल की पुड़ी मढी होती है जिसपर वादन होता है

चाटी - किनारे का भाग पुड़ी का चाटी कहलाती है।

स्याही - पुड़ी के बीच स्याही लगी होती है जो लोहे के भस्म से बनती है

लव - चाटी व स्याही के बीच का स्थान लव / मैदान कहलाता है।

गजरा - पुड़ी के चारों तरफ गुथी हुई रचना गजरा कहलाती है।

मैदान - तबले का ड्गा मे स्याही व चाटी के बीच का स्थान मैदान कहलाता है

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर - 8 खण्ड - स

बाज - वादन की शैली को बाज कहा जाता है।
मुख्यतः खला वाद्य के घरानों की वादन शैलियों को ही बाज की संज्ञा दी गयी है।
बाज का शाब्दिक अर्थ है 'बजाना' अथवा वादन

भारतीय तबले संस्कृति में बाज मुख्यतः दो प्रकार के है।
(1) पश्चिम बाज
(2) पुरब बाज

	पश्चिम बाज	पुरब बाज
(1)	पश्चिम बाज के अन्तर्गत दिल्ली घराना तथा अजराड़ा घराना आते है	पुरब बाज के अन्तर्गत लखनऊ घराना, बनारस घराना, फर्रुखाबाद घराना आता है
(2)	पश्चिम बाज को दो उंगलियों का बाज तथा किनारे का बाज भी कहते है	पुरब बाज को खुला बाज कहा जाता है।
(3)	पश्चिम बाज में पखावज के बोलो का परिवर्तित कर तबले पर वादन किया जाता है	पुरब बाज में भी पखावज के बोलो को तबले पर वादन किया जाता है।

(4) पुश्चिम बाज के बोल जोरदार होते है	पूरब बाज के बोल कोमल होते है।
(5) पश्चिम बाज में मुख्यत: डग्गा का प्रयोग अधिक किया जाता है। —	पूरब बाज मे चाटी तथा लव का प्रयोग अधिक किया जाता है
(4) इसमे चलस्त तथा क्लिस्त जाति की तालों का वादन होता है	इसमे परन टुकड़ा तोड़ा पेशकर आदि का वादन किया जाता है।
(5) इसके कुछ प्रसिद्ध तबला वादक हबीबुद्दीन (संगीत सम्राट)	इसके प्रसिद्ध तबला वादक पं. राम सहाय, किशन महाराज कण्ठे महाराज

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

15

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

19

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not write anything in this Portion

Do Not Write anything in this Portion